E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 62-64
Received: 16-05-2019
Accepted: 19-06-2019

डॉ० शंकर शरण प्रसाद
+2 बासुदेव मिश्र उच्च विद्यालय, सिमरी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० शंकर शरण प्रसाद
+2 बासुदेव मिश्र उच्च विद्यालय, सिमरी, बिहार, भारत

पौराणिक एवं जनश्रुतियों के आधार पर ब्रजः एक समीक्षा

डॉ० शंकर शरण प्रसाद

प्रस्तावना

ब्रजशब्द संस्कृत धातु व्रज गतौ से बना है, जिसका अर्थ गतिशीलता से है, जहाँ गाय चरती हैं एवं विचरण करती हैं, वह स्थान भी ब्रज कहा गया है। अमरकोश के लेखक ने ब्रज के तीन अर्थ प्रस्तुत किये हैं– गोष्ठ (गायों का बाड़ा) मार्ग और वृंद (झुण्ड)। जैसे–[1] 'गोष्ठाध्वनिवहा व्रजः।'

संस्कृत के वृज शब्द से ही हिन्दी का ब्रज शब्द बना है। वैदिक संहिताओं एवं रामायण, महाभारतादि प्राचीन धर्मग्रंथों में ब्रजशब्द गोशाला, गो–स्थान, गोचरभूमि के अर्थों में भी प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद में यह शब्द गोशाला के रूप में वर्णित है। यथा–[2] 'गवामयं व्रजं वृधि कृष्णुष्व राधो अद्रिवः' एवं 'यं त्वां जनासो अभिसचरन्ति गाव उष्णमिव व्रजं यविष्ठ।' यजुर्वेद में गायों के चरने के स्थान को ब्रज और गोशाला को गोष्ठ कहा गया है। यथा–[3] व्रजं गच्छ गोष्ठान।' शुक्लयजुर्वेद में सुन्दर सींगों वाली गायों के विचरणस्थान से ब्रज का संकेत मिलता है। [4] अथर्ववेद में गोशलाओं से सम्बधित एक सम्पूर्ण सूक्त ही प्रस्तुत है। [5] हरिवंश तथा भागवतपुराणों में यह शब्द गोप बस्त के रूप में प्रयुक्त हुआ है। जैसे–[6]

'तद् व्रजस्थानमधिकं शुशुभे कानना वृतम्।
बृजे वसन् किमकरोन्मधुपर्या च केशव।।'

स्कन्दपुराण में महर्षि शाण्डिल्य ने ब्रजशब्द का अर्थ को व्यापक ब्रह्म के रूप में स्वीकार किया है। अत यह शब्द ब्रज की आध्यात्मिकता से सम्बधित है। [7]

वेदों से लेकर पुराणों तक में ब्रज का सम्बध गायों से वर्णित किया गया है। चाहे वह गायों को बाँधने का बाड़ा हो, गोशाला हो, गोचरभूमि हो अथवा गोप–बस्ती हो।

भागवतकार की दृष्टि में गोष्ठ, गोकुल एवं ब्रज समानार्थक शब्द हैं। भागवत के आधार पर सूरदास की रचनाओं मे भी ब्रज का प्रयोग इसी अर्थ में हुआ है। यथा–[8]

'वका विदारि चले बृज को हरि।'
'दावानल ब्रज जन पर छापौ।'
'ब्रज में बाजति आज बधाई।'
'ब्रज ते वन को चलत कन्हैया।'
'पाछे एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभु आप ब्रज में पाँउ धारे।'
'सो अलीखान ब्रज देखिकै बोहोत प्रसन्न भए।'

मथुरा एवं उसके निकटवर्ती भू–भाग प्राचीन काल से ही अपने सघन वनों, विस्तृत चारागाहों, गोष्ठों एवं सुन्दर गायों के लिये प्रसिद्ध रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म यद्यपि मथुरी नगर में हुआ था, तथापि विभिन्न कारणों से उन्हें जन्म लेते ही यमुना के पार गोप–बस्ती में जाना पड़ा, उनकी बाल्यावस्था एक बड़े गोपालक के घर गोप, गोपी तथा गोवृन्द के साथ बीती थी। उस समय उनके पालक नन्दादि गोपगण अपनी सुरक्षा तथा गोचर–भूमि की सुविधा के लिये गोकुल के साथ–साथ मथुरा के निकटवर्ती विस्तृत वन–खण्डों में घूमा करते थे। श्रीकृष्ण के कारण उन गोप–गोपियों, गायों तथा गोचर–भूमियों का महत्त्व बढ गया था।

पौराणिक काल से लेकर वैष्णवसम्प्रदायों के आविर्भाव काल तक जैसे–जैसे कृष्णोपासना का विस्तार होता गया, वैसे–वैसे श्रीकृष्ण के परिकरों एवं लीलास्थलों के गौरव की भी वृद्धि होती गई। उस समय वहाँ गो–पालन की प्रचुरता थी, जिसके कारण ब्रजखण्डों की भी प्रचुरता हो गई थी। अतः श्रीकृष्ण के जन्मस्थान मथुरा एवं उनकी लीलाओं से सम्बन्धित मथुरा के समीप का समस्त प्रदेश ही ब्रज अथवा ब्रजमण्डल कहा जाने लगा।

सूरदास एवं अन्य ब्रजभाषा के भक्त कवियों और वार्ताकारों ने भागवत पुराण के अनुकरण पर मथुरा के निकटवर्ती वन्यप्रदेश की गोप–बस्ती को ब्रज कहा है तथा उसे सर्वत्र मथुरा, मधुपुरी अथवा मधुवन से पृथक् बताया है। यथा–[9]

'आतुर रथ हांक्यौ मधुबन को ब्रज जन भऐ अनाथ।'
'सूरदास प्रभु आई मधुपुरी, ऊधौ को ब्रज दियौ पठाई।'

आजकल मथुरा नगरी सहित वह भू–भाग, जो श्रीकृष्ण के जन्म और उनकी विविध लीलाओं से सम्बधित है, ब्रज कहलाता है। इस प्रकार ब्रज वर्तमान मथुरा मंडल और प्राचीन शूरसेन प्रदेश का अपर नाम और उसका एक छोटा रूप है। इसमें मथुरा, बृन्दावन, गोवर्धन, गोकुल, महावन, बलदेव, नन्दगाँव, बरसाना, डीग एवं कामवन आदि भगवान् श्रीकृष्ण के सभी लीला–स्थल सम्मिलित हैं। उक्त ब्रज की सीमा को चौरासी कोस माना गया है।

इस प्रकार ब्रज शब्द का काल–क्रमानुसार अर्थ विकास हुआ है। वेदों और रामायण–महाभारत के काल में जहाँ इसका प्रयोग गोष्ठ–गो–स्थान जैसे लघुस्थल के लिये होता था। वहीं पौराणिक काल में गोप–बस्ती जैसे कुछ बड़े स्थान के लिये किया जाने लगा। उस समय तक यह शब्द प्रदेशवायी न होकर क्षेत्रवायी ही था।

भागवत मे ब्रज क्षेत्रवायी अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। [10] वहां इसे एक छोटे ग्राम की संज्ञा दी गई है। उसमें पुर से छोटा ग्राम और उससे भी छोटी बस्ती को ब्रज कहा गया है। यथा–[11] 'शिथूश्चकार निछन्नन्ती पुरग्रामव्रजादिषु।' सोलहवीं शताब्दी में ब्रज प्रदेशवायी से ब्रजमण्डल हो गया और तब उसका आकार 84 कोस का माना जाने लगा था। यथा–[12]

'डेरा परे कोस चौरासी। इतने लोग जुरे ब्रजवासी।।'
'आई जुरे सव ब्रज के वासी। डेरा परे कोस चौरासी।।'

उस समय मथुरा नगर ब्रज में सम्मिलित नहीं माना जाता था। सूरदास एवं अन्य ब्रज–भाषी कवियों ने ब्रज और मथुरा का पृथक् रूप में ही कथन किया है। कृष्णोपासक सम्प्रदायों और ब्रजभाषी कवियों के कारण जब ब्रज संस्कृति और ब्रजभाषा का क्षेत्र विस्तृत हुआ तब ब्रज का आकार भी सुविस्तृत हो गया। उस समय मथुरा नगर ही नहीं, अपितु उससे दूर–दूर के भू–भाग, जो ब्रज संस्कृति और ब्रजभाषा से प्रभावित थे, ब्रज के अन्तर्गत मान लिये गये थे। वर्तमान समय में मथुरा नगरी सहित मथुरा जिले का अधिकांश भाग एवं राजस्थान के डीग और कामवन का कुछ भाग, जहाँ से ब्रजयात्रा गुजरती है, ब्रज कहा जाता है। ब्रजसंस्कृति एवं ब्रजभाषा का क्षेत्र और भी विस्तृत है।

उपरोक्त समस्त भू–भाग रे प्राचीन नाम, मधुवन, शुरसेन, मधुरा, मधुपुरी, मथुरा और मथुरामण्डल थे तथा आधुनिक नाम ब्रज या ब्रजमण्डल हैं। यद्यपि इनके अर्थबोध और आकार–प्रकार में समय–समय पर अन्तर होता रहा है। इस भूमाग की धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और संस्कृतिक परंपरा अत्यन्त गौरवपूर्ण रही है। व्रजन्ति गावो यस्मिन्निति व्रजः।'

जिन पुराणों में ब्रज के महत्त्व के साथ–साथ विस्तार का भी वर्णन हुआ है, उनमें वाराहपुराण सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसमें मथुरा मण्डल के विविध रूपों से इतना अधिक उल्लेख किया गया है कि वाराहपुराण को यदि ब्रजमण्डल से सम्बधित पुराण ही कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उसी पुराण का एक अंश मथुरा महात्म्य के नाम से भी प्रसिद्ध है। वाराहपुराण में मथुरा मण्डल का विस्तार 20 योजन बताया गया है एवं अनेक प्रसंगों पर इसकी विक्षप्ति करते हुए विभिन्न प्रकार से इसके महत्त्व का वर्णन किया गया है। यथा–[13]

'विंशतिर्योजनानान्तु माथुरं मम मण्डलम्।
यत्र तत्र नरः स्नातो मुच्यते सर्वकिल्विषैः।।'
'विंशतिर्योजनानान्तु माथुरं मम मण्डलम्।
इदं वृक्षं महाभागे सर्वेषां मुक्तिदायि च।।'
'विंशतिर्योजनानां हि माथुरं मम मण्डलम्।
पदे पदेऽश्वमेधानां फलं नात्र विचारण।।'

वायुपुराण में मथुरामण्डल का विस्तार 40 योजन वर्णित किया गया है। यथा–[14] 'चत्वारिंशद् योजनानां ततस्तु मथुरा।' किन्तु उसका कथन वाराहपुराण के उल्लेख के समान मान्यता और प्रसिद्धि नहीं प्राप्त कर सका। एक योजन साधारणतया चार कोस अथवा सात मील का होता है, इसलिये मोटे तौर पर ब्रजमण्डल का विस्तार 84 कोस का समझा जाने लगा।

चौरासी कोस के इस ब्रजमण्डल का आकार कहाँ से कहाँ तक है, इसे बताने के लिये ब्रज में कई अनुश्रुतियाँ प्रचालित हैं। ऐसी ही एक दोहाबद्ध अनुश्रुति ब्रज के प्रसिद्ध शोधकर्ता श्री एफ. एस. ग्राउज ने इलियट की गलौसरी से उद्धृत की है, जिसका पाठ उन्होंने इस प्रकार दिया है–[15]

'इत वरहद इत सोनहद, उत सूरसेन के गांव।
ब्रज चौरासी कोस में, मथुरामण्डल मांह।।'

उपरोक्त दोहा में आये हुए स्थलों के पहचान के लिए श्रीग्राउज ने ब्रज की सीमाओं पर स्थित वनों के नामोल्लेख करने वाले एक एक श्लोक को भी उद्धृत किया है, जिसका पाठ उन्होंने इस प्रकार अंकित किया है–

'पूर्वं हास्यवनं नीय पश्चिमस्यापहाकिंरक।
दक्षिणे जह्नु संज्ञाकं भुवनाख्यं तथोत्तरे।।'

ग्राउज महोदय ने पण्डितों से उक्त श्लोक में आये हुए वनों के नामों का मिलान पूर्वोक्त दोहा के नामों से करने को कहा, तो उन्होंने बताया– पूर्व का हास्य वन ही बरहद है, जो अलीगढ़ जिले में है। पश्चिम का उपहार बन गुड़गांव जिले का सोनहद है, दक्षिण का जह्नु वन सूरसेन का गाँव अर्थात् बटेश्वर है तथा उत्तर का भुवन वन शेरगढ़ के निकट का भूषण वन है। [16]

ग्राउज महोदय का स्पष्ट कथन है कि वे पूर्वोक्त दोहा को किसी ऐतिहासिक शोध का सूचक नहीं मानते हैं [17] और उक्त श्लोक में आये हुए वनों के पहचान को कल्पना से अधिक महत्त्व नहीं देते हैं। अतः उनकी अधिक छानबीन करने की अवश्यकता भी उन्होंने नहीं समझी। [18] फिर भी ब्रज के विस्तार और इसकी सीमा के सम्बन्ध में लिखने वाले कई विद्वानों ने ग्राउज के कथन को महत्त्वपूर्ण मानकर प्रमाणरूप में उद्धृत किया है। [19]

ब्रज विस्तार से सम्बन्धी अंश गर्गसंहिता में निम्न प्रकार से वर्णित है–[20]

'प्रागुदीच्यां बर्हिषदो दक्षिणास्यां यदोः पुरात्।
पश्चिमायां शोणपुरान्माथुरं मण्डलं विदुः।।
विंशयोजनविस्तीर्णमेकयोजनसंयुतम्।
माथुरं मण्डलं दिव्यं व्रजमाहुर्मनीषिणः।।'

नन्दरायजी के पूछने पर सन्नंदजी ने ब्रज का परिचय देते हुए कहा था– 'जिसके पूर्व–उत्तर में वर्हिषद (बरहद) है, दक्षिण में यदुपुर (सूरसेन ग्राम) है, पश्चिम में शोणपुर (सोनहद) है, उस बीस योजन सहित एक योजन विस्तृत दिव्य माथुरमंडल को मनीषी ब्रज कहते हैं।'

ब्रजसीमा के सम्बन्ध में श्रीनारायण भट्टकृत ब्रजभक्तिविलास में भी वर्णित है, जिसका संस्करण गौड़ीय विद्वान् बावा कृष्णदास ने प्रकाशित किया। जिसमें श्लोकपाठ इस प्रकार है–[21]

'पूर्वं हास्यवनं नाम पश्चिमस्यात्पहारिकम्।
दक्षिणे जन्हुसंज्ञकं सोनहदाख्यं तथोत्तरे।।'

निष्कर्ष:

अनुश्रुति के दोहा में जहाँ तीन ओर की हद का विवरण प्रस्तुत किया है, वहीं गर्गसंहिता के उद्धरण में वर्हिषद (बरहद) को पूर्व–उत्तर में स्थित बताकर चारों दिशाओं की सीमा देने की चेष्टा की गयी है। इसी प्रकार ब्रजभक्तिविलास के उद्धरण विषयक दोनों पाठों में भी थोड़ा सा अन्तर है। बाबा कृष्णदास के पाठ में उत्तरी सीमा के वन का नाम सोनहद बताया गया है, जबकि ग्राउज के पाठ में इसका नाम भुवन वन है। ग्राउज ने पश्चिम के अपहारि वन या उपहार वन का पहचान करते हुए उसे गुड़गाँव जिले का सोन बताया है। उन्होंने वर्णित किया है कि गड़गांवा में गंधक के गर्म स्रोतों के लिये प्रसिद्ध है। [22] डॉ. दीन दयाल गुप्त ने सोन को गुड़गाँवा जिले की छोटी सी बरसाती नदी बताया है। [23]
सोनहद गुड़गाँव जिले में होडल के निकट एक छोटा ग्राम है। सम्भव है कि पूर्व काल वहाँ कोई बरसाती नदी भी हो, किन्तु उसे व्रज की पश्चिमी सीमा के उपहार वन में मानना ग्राउज का भ्रमात्मक कथन है। गुड़गाँवा और सोनहद मथुरामण्डल के प्रायः उत्तर में है, न कि पश्चिम में। ब्रज की उत्तरी सीमा के वन को ब्रजभक्तिविलास में एक स्थान पर सोनहद वन और दूसरे स्थान पर सूर्यपत्तन वन अंकित किया है। सूर्यपत्तन का वर्तमान पहचान समई खेड़ से की जा सकती है जो भरतपुर के बहुत के निकट स्थित है। [24]

सन्दर्भ–सूची:

1. अमरकोश– 3.3.30
2. ऋग्वेद– 1.10.7, 10.4.2
3. यजुर्वेद– 1.25
4. मथुरा ए डिस्ट्रक्ट मेमोअर, पृ.– 91
5. अथर्ववेद– 2.26.1
6. भागवत– 10.1.10
7. भगवत महात्म्य, वैष्णव खण्ड– 1.19–20
8. सूरसागर पद– 1047, 1210, परमानन्दसागर पद– 17, 274,
9. चौरासी वैष्णव की वार्ता पृ.– 6, दोसौ बावन वैष्णव की वार्ता प्रथम खण्ड, पृ.– 299
10. सूरसागर पद– 3611, 4029
11. श्रीमद्भागवत– 10.1.8, 9
12. श्रीमद्भागवत– 10.6.2
13. सूरसागर पद– 1537, 1523
14. वाराहपुराण– 158.1, 163.15, 168.10
15. वायुपुराण– 25.17
16. मथुरा ए डिस्ट्रक्ट मेमोअर, पृ.– 78
17. मथुरा ए डिस्ट्रक्ट मेमोअर, पृ.– 91
18. मथुरा ए डिस्ट्रक्ट मेमोअर, पृ.– 79
19. मथुरा ए डिस्ट्रक्ट मेमोअर, पृ.– 91
20. अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय, पृ.– 2–3, ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन, पृ.– 45–46
21. गर्गसंहिता, (बृन्दावन खण्ड– 1.11–12
22. श्रीब्रजभक्ति विलास (2.16) पृ.– 34
23. मथुरा ए डिस्ट्रक्ट मेमोअर, पृ.– 79
24. अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय, पृ.– 4
25. ब्रजमण्डल दर्शन, पृ.– 51